(III) गतिहीन स्फीति (स्टैगफ्लेशन) (Stagflation)

'Staglfation' शब्द दो शब्दों—Stagnation तथा Inflation से मिलकर बना है जो इस बात का प्रती है कि अर्थव्यस्वथा में एक ओर तो कीमतें बढ़ती हैं तथा दूसरी ओर, आर्थिक विकास अवरुद्ध होकर अर्थव्यवस्थ में निष्क्रियता एवं जड़ता की स्थिति आ जाती है। इस स्थिति को ही गतिहीन स्फीति की स्थिति कहते हैं।

इस प्रकार गतिहीन स्फीति में मन्दी के साथ-साथ मुद्रा-स्फीति अर्थात् कीमतों में वृद्धि के साथ-सा बेरोजगारी की वृद्धि दिखायी पड़ती है। संक्षेप में, स्टैगफ्लेशन में मुद्रा-स्फीति, महँगाई, बेरोजगारी तथा उत्पाद में जड़ता साथ-साथ चलती हैं।

गतिहीन स्फीति उत्पन्न होने के कारण (Causes for Stagflation)—गतिहीन स्फीति उत्पन्न होने विभिन्न कारण बताये जाते हैं जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं :

(1) **मिश्रित अर्थव्यवस्था** (Mixed Economy)—सैम्युअलसन की मान्यता है कि गतिहीन स्फीति मुख्य कारण 'मिश्रित अर्थव्यवस्था' है। आधुनिक युग में सभी देशों में जनता को अधिकाधिक रोजगार देने नीति अपनाने की प्रवृत्ति पायी जाती है। अधिक रोजगार देने के लिए उदार मौद्रिक नीति अपनायी जाती है। इत ही नहीं, मूल्यों की सामान्य दर से बढ़ने की प्रवृत्ति को उचित नीति माना जाता है। अतः मूल्य स्थायित्व के लि सरकार कोई प्रयत्न नहीं करती। यहाँ तक कि फसलें बढ़िया होने पर भी सरकार मूल्यों को नीचे नहीं आने देती इस प्रकार मूल्य निरन्तर ऊँचे बने रहते हैं। भारत तथा अनेक एशियाई देशों में इसके उदाहरण मिल सकते हैं

(2) **प्राकृतिक प्रकोप** (Natural Calamities)—प्रो. सैम्युअलसन का यह भी मत है कि प्राकृतिक प्रका जैसे—सूखा, बाढ़ आदि के कारण भी गतिहीन स्फीति उत्पन्न हो जाती है। एशिया और अमेरिका के देशों निरन्तर सूखा पड़ने और बाढ़ आने से खाद्यान्नों में कम उत्पादन के कारण उनकी कीमतों में अत्यधिक वृद्धि है। इसी प्रकार तेल तथा कोयले की कीमतों में वृद्धि हुई। इन आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि का व्याप प्रभाव पड़ा किन्तु इससे रोजगार और उत्पादन की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। सैम्युअलसन ने इसे व्य आर्थिक वस्तु स्फीति (Micro Economic Commodity Inflation) की संज्ञा दी है।

(3) **लम्बे समय तक स्फीतिजनक शक्तियों की विद्यमानता** (Existance of Inflationary Conditio for Long Period)—"गतिहीन स्फीति की अवस्था उस समय उत्पन्न होती है, जबकि अर्थव्यवस्था

Scanned with CamScanner

स्फीतिजनक परिस्थितियाँ एक लम्बी अवधि तक विद्यमान रहती हैं। कीमतों में असाधारण वृद्धि के कारण वास्तविक आय कम हो जाती है। फलतः वस्तुओं और सेवाओं की माँग में कमी आ जाती है। एक सीमा तक बढ़ती हुई कीमतें उत्पादन में वृद्धि को प्रोत्साहित करती हैं लेकिन इसके बाद माँग प्रायः स्थिर हो जाती है अथवा कम होने लगती है तत्पश्चात् उत्पादन में वृद्धि का क्रम रुक जाता है। स्फीति के कारण लागतें बढ़ती है, कीमतों में वृद्धि होती है, उत्पादन में अनिश्चितता पैदा हो जाती है और लागत और कीमत का सम्बन्ध विच्छिन्न हो जाता है। इस प्रकार उत्पादन में अवसाद की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।"

(4) **स्फीति के नियन्त्रण सम्बन्धी उपाय** (Measures to Control Inflation)—स्फीति को नियन्त्रित करने के लिए जो उपाय अपनाये जाते हैं, उसके बाद मन्दी या अवसाद की स्थिति पैदा हो जाती है। साख को नियन्त्रत करने के लिए मुद्रा की माँग पर जो प्रतिबन्ध लगाये हैं, उससे उत्पादन के लिए उपलब्ध वित्तीय साधनों में कमी हो जाती है। ब्याज की दरों में वृद्धि विनियोग क्रियाओं को हतोत्साहित करती है। आय को नियन्त्रित करने के लिए जो उपाय अपनाये जाते हैं, इससे कुल माँग में कमी हो जाती है। इस प्रकार ये उपाय उत्पादन की मात्रा को पहले की अपेक्षा कम कर देते हैं फलतः स्फीतिक व अस्फीतिक दोनों ही प्रकार के दबावों का सह-अस्तित्व रहता है।

(5) **आयातित स्फीति** (Imported Inflation)—गतिहीन स्फीति का एक कारण यह भी है कि अमेरिका निरन्तर कच्चा और निर्मित माल विदेशों से आयात करता है। फ्रांस, जर्मनी आदि देशों ने भी अपने आयातों को पर्याप्त उदार रखा है। अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस आदि ने माल खरीदकर जो भुगतान किये हैं तथा विकासशील तथा अन्य देशों को जो ऋण दिये हैं, उनसे इन देशों के बैंकों के कोषों में वृद्धि हुई है जिससे तीव्र गति से साख निर्माण हुआ है और स्फीतिक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन मिला है। इन प्रवृत्तियों ने रोजगार तथा उत्पादन को विशेष प्रोत्साहन नहीं दिया।

Scanned with CamScanner